पाठ 3. परीक्षा

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में विवेचनात्मक सोच संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे अपने अनुभवों का सकारात्मक मूल्यांकन कर सकें। किसी व्यक्ति के वास्तविक गुण उसकी उपाधि के प्रमाण पत्र में निहित नहीं होते। किसी को परखना ही हो तो उसके भीतर के मनुष्य को जानना चाहिए। इस जानने के क्रम में वाणी का विलास तो फिर भी वास्तविकता में भ्रम पैदा कर सकता है लेकिन कुछ खास परिस्थितियों में मनुष्य के वास्तविक गुणों की परीक्षा ज़रूर हो जाती है।

पाठ का सार

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद की यह कहानी शुरू होती है रियासत देवगढ़ के अनुभवी दीवान सुजानसिंह से जिन्हें अब बढ़ती उम्र के कारण कामकाज से मुक्ति चाहिए। इसलिए रियासत को चाहिए नया दीवान। अब दीवान चुनने की ज़िम्मेदारी भी राजा साहब ने सुजानसिंह को ही सौंपी। जगह-जगह विज्ञापन पहुँच गया कि जो नवयुवक अपने-आपको इस पद का उचित पात्र समझते हैं, चले आएँ रियासत देवगढ़ में। नवयुवकों के दल के दल आने लगे। सब के सब अपने असली रूप को छिपाकर नकलीपन को दिखाने लगे।

खेल के भीतर एक खेल और चल रहा था। सुजानसिंह ने एक नाले में अपनी गाड़ी जानबूझकर फँसाई। उसी फँसावट में से पद के लिए सुपात्र चुनने की समस्या का हल निकला। जिस नौजवान ने अपनी चिंता न करते हुए कीचड़ में घुटनों-घुटनों धँसकर फँसी हुई गाड़ी को बाहर निकालने में मदद की, वही नौजवान सुजानसिंह की परीक्षा में सफल हुआ। उस नौजवान का नाम था पंडित जानकीनाथ।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  कहानी को पढ़ते-पढ़ाते समय विद्यार्थियों के ज्ञानार्जन व मानसिक स्थिति को परखने के लिए प्रश्नों का पूछा जाना श्रेयस्कर रहता है।

  वाचन की गति, बलाघात और उच्चारण के सही रूप को सुनिश्चित करने के लिए बीच-बीच में अध्यापक द्वारा कहानी के अंशों को मुखर वाचन के रूप में प्रस्तुत किया जाना प्रासंगिक जान पड़ता है।

  कहानी के प्रश्नोत्तर में विद्यार्थियों से यह पूछना कि 'तुम क्या सोचते हो?' विद्यार्थियों के मानसिक विकास व उनमें ज़िम्मेदारी व सहभागिता की भावना को बढ़ाएगा।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 3** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - संज्ञा के भेदों को व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया जाना व्याकरण को दुरुह होने से बचाता है। संज्ञा कब विशेषण बन जाती है यह भी बताया जाए। भाववाचक संज्ञा पाठ में आए शब्दों को आधार बनाकर ही समझाई जाए। यही बात विलोम शब्द छाँटने-बनाने पर भी लागू होती है। साथ ही वर्तनी वाले शब्द चुनने पर भी बल दें।

- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - प्रतिनिधि-परामर्शों के आधार पर चयन-प्रक्रिया को अंजाम दें।
  - प्रसिद्ध हॉकी खिलाड़ी ध्यानचंद से संबंधित जानकारी प्राप्त कर एक परियोजना तैयार करवाई जाए।